पाठ-योजना

विषय : संस्कृत

दिनाङ्क :..... **उपविषय :** पद्य **कालांश :.....**

कक्षा :..... **प्रकरण : "परोपकार"** **समय :.....**

विद्यालय का नाम :.....

उद्देश्य संकेत	व्यवहारगत अपेक्षित परिवर्तन
१. **सामान्य उद्देश्य :**	१. छात्रों की संस्कृत पद्य में रूचि उत्पन्न करना। २. छात्रों को संस्कृत श्लोकों का उचित लय, यति, गति एवं समुचित भावनुसार शुद्ध पाठ करने की योग्यता प्रदान करना। ३. छात्रों को संस्कृत पद्य में व्यक्त भावों को आत्मसात करने की योग्यता प्रदान करना। ४. पद्य सौन्दर्यानुभूति की क्षमता उत्पन्न करके छात्रों को शैली, छन्द, अलंकार आदि का ज्ञान प्राप्त करना। ५. पद्य के माध्यम से नैतिक मूल्यों का ज्ञान कराकर छात्रों का चारित्रिक विकास करना। ६. श्लोकों का रसास्वादन करके अपने शब्दों में उनकी व्याख्या करने के सुयोग्य बनना। ७. छात्रों में संस्कृत साहित्य के प्रति प्रेम उत्पन्न करना। ८. छात्रों को संस्कृत साहित्य का आलोचनात्मक अध्ययन करने हेतु प्रोत्साहित करना।
२. **विशिष्ट उद्देश्य :** (i) **ज्ञानात्मक :**	१. श्लोक के माध्यम से सन्त पुरूषों के चरित्र का ज्ञान कराना। २. छात्रों को परोपकार के महत्व से परिचित करवाना। ३. छात्रों को ज्ञान कराना कि संत पुरूषों की सच्ची सम्पत्ति परोपकार ही है।
(ii) **कौशलात्मक :**	१. पद्य के केन्द्रीय भाव को ग्रहण करने की योग्यता विकसित करना। २. उचित गति, यति एवं लय के अनुसार श्लेक का पाठ करने की योग्यता उत्पन्न करना। ३. भिन्न-भिन्न प्रकार के श्लोकों का संकलन करने का कौशल विकसित करना।

(iii) **अभिवृत्यात्मक :**	१. छात्रों की भावनाओं का परिष्कार करके सद्भावना के विकास का प्रयास करना। २. छात्रों में परोपकार की प्रवृत्ति का विकास करना।
(iv) **रूच्यात्मक :**	१. छात्रों में संस्कृत पद्य के प्रति रूचि में अभिवृद्धि करने का प्रयास करना। २. भाषण, लेखन, वार्तालाप आदि में संस्कृत श्लोकों के प्रयोग की कला विकसित करना।
३. **सहायक सामग्री**	परोपकार के कार्यों से सम्बन्धित चित्रों का संकलन प्रदर्शित करता हुआ चित्र।
४. **पूर्वज्ञान :**	छात्र अपनी पिछली कक्षा में परोपकार विषय पर कुछ श्लोकों का अध्ययन कर चुके हैं तथा इस सम्बन्ध में अपने शिक्षकों एवं घर में अपने बुजुर्गों से कथायें भी सुन चुके हैं।
५. **प्रस्तावना प्रश्न :**	छात्राध्यापक/छात्राध्यापिका लपेट श्यामपट् पर परोपकार से सम्बन्धित रहीमदास जी का एक दोहा छात्रों के सम्मुख प्रस्तुत करके पाठ की प्रस्तावना निकालने का प्रयास करेगा/करेगी – ''तरूवर फल नहीं खात हैं, सरवर पियहिं न पान। कहि रहीम पर काज हित, संपति संचहि सुजान।। अर्थात् कविवर रहीमदास जी कहते हैं कि जिस प्रकार पेड़ कभी स्वयं अपने फल नहीं खाते और तालाब, सरोवर या नदी भी कभी अपना पानी स्वयं नहीं पीती। ठीक उसी प्रकार सज्जन व्यक्ति दूसरों के हित के लिए भी सम्पत्ति का संचय करते हैं।

<table>
<tr><td></td><td colspan="2">छात्राध्यापक/छात्राध्यापिका कक्षा की ओर उन्मुख होते हुए उनसे प्रश्न पूछेगा/पूछेगी –</td></tr>
<tr><td></td><td>छात्राध्यापक क्रिया</td><td>छात्र अनुक्रिया</td></tr>
<tr><td></td><td>प्र०–१–लपेट श्यामपट् पर लिखे दोहे की पहली पंक्तियों को पढ़े</td><td>छात्र पहले की दो पंक्तियों को पढ़ते हैं।</td></tr>
<tr><td></td><td>प्र०–२–दोहे की पहली पंक्ति में कौन अपने फल नहीं खाते?</td><td>वृक्ष</td></tr>
<tr><td></td><td>प्र०–३– दोहे की दूसरी पंक्ति में कौन अपना जल स्वयं नहीं पीता?</td><td>सरोवर</td></tr>
<tr><td></td><td>प्र०–४– अब दोहे की अगली पंक्तियों को भी पढ़िये।</td><td>छात्र दोहे की अन्तिम दो पंक्तियों को भी पढ़ते हैं।</td></tr>
<tr><td></td><td>प्र०–५– अन्तिम पंक्ति में कवि ने सज्जन व्यक्ति के विषय में क्या कहा?</td><td>सज्जन व्यक्ति दूसरों के हित के लिए सम्पत्ति का संचय करते हैं।</td></tr>
<tr><td></td><td>प्र०–६– जब हम दूसरे के हित को ध्यान में रखकर कोई कार्य करते हैं, तो उसे क्या कहा जाता है?</td><td>छात्र मौन
समस्यात्मक प्रश्न।</td></tr>
<tr><td>६. उद्देश्य कथन :</td><td colspan="2">जब हम दूसरे के हित को ध्यान में रखते हुए कोई कार्य करते हैं, तो वह कार्य ‘परोपकार’ कहलाता है। आज की कक्षा में हम ‘परोपकार’ नामक पद्य में ‘परोपकार की महिमा’ को समझेंगे।</td></tr>
<tr><td>७. प्रस्तुतीकरण</td><td colspan="2">पद्य की गरिमा, भाव एवं सौन्दर्य को बनाये रखने के लिए हम ‘परोपकार’ नाम पद्य को एक ही अन्विति में पढ़ेंगे।

परोपकाराय.....स जीवति।
परोपकाराय फलन्ति वृक्षाः, परोपकाराय वहन्ति नद्यः।
परोपकाराय दुहन्ति गावः, परोपकारार्थ मिदं शरीरम्।।
आत्मार्थ जीवलोकेऽस्मिन् को न जीवति मानवः।
परं परोपकारार्थं यो जीवति स जीवति।।</td></tr>
</table>

<table>
<tr><td>८. आदर्श वाचन</td><td>छात्राध्यापक/छात्राध्यापिका सम्पूर्ण पद्यांश का उचित लय, यति, गति एवं समुचित भावानुसार आदर्श पाठ करेगा/करेगी।</td></tr>
<tr><td>९. अनुकरण वाचन</td><td>छात्राध्यापक/छात्राध्यापिका कक्षा के कतिपय छात्रों से पद्य का शुद्धता से पाठ करवाने का प्रयास करवायेगा/करवायेगी।</td></tr>
<tr><td>१०. केन्द्रीय भाव बोध प्रश्न</td><td>प्र०–१–प्रस्तुत श्लोके कस्य महिमा गान अस्ति?
प्र०–२–प्रस्तुत श्लोके केन्द्रीय विचारः कः अस्ति?
प्र०–३–परोपकारात् पञ्च वाक्यानि लिखत्।</td></tr>
<tr><td>११–काठिन्य निवारण</td><td><table><tr><th>शब्द</th><th>अर्थ</th></tr><tr><td>वहन्ति
फलन्ति
परोपकारार्थ
आत्मार्थं
जीवति</td><td>बहती है
फल देते हैं
परोपकार के लिए
अपने लिये
जीते हैं</td></tr></table></td></tr>
<tr><td>१२–लेखन एवं निरीक्षण कार्य</td><td>छात्राध्यापक/छात्राध्यापिका श्यामपट् पर लिखित कार्य अपनी-अपनी उत्तर पुस्तिका पर लिखने का आदेश देगी तथा स्वयं कक्षा का भ्रमण कर निरीक्षण करेगी।</td></tr>
<tr><td>१३–मौन पाठ</td><td>छात्राध्यापक/छात्राध्यापिका कक्षा को पद्य पाठ का मौन रूप से पाठ करने का आदेश देगी जिससे तथा पाठ के मूल भाव को ग्रहण किया जा सके।</td></tr>
<tr><td>१४–भाव विश्लेषणात्मक प्रश्न</td><td>छात्राध्यापक/छात्राध्यापिका छात्रों द्वारा पठित पद्य के गृहीत भावों की जाँच हेतु निम्नलिखित भाव विश्लेषणात्मक प्रश्न पूछेंगे –
१– “परापकाराय फलन्ति वृक्षा :,
परोपकाराय वहन्ति नद्य।”
प्र0-1-उपर्युक्त कथनेन किम् तात्पर्यम् अस्ति?
उ0-परोपकाराय वृक्षाः फलन्ति एवम् परोपकाराय नद्यः अपि वहन्ति।

<u>स्पष्टीकरण</u> :
हाँ, ठीक कहा दूसरों की भलाई के लिये ही वृक्ष फल देते हैं और नदी भी हम सब की भलाई के लिये ही बहती हैं।</td></tr>
</table>

समभाव कविता :

"वृक्ष कबहु नहीं फल भखैं, नदी न संचय नीर।
परमारथ के कारने साधुन धरा सरीर।"

कबीरदास द्वारा दी गई उपर्युक्त पंक्ति श्लोक के सन्दर्भ में समभाव के साथ श्लोक के भाव को पूर्ण भी कर रही हैं कि परोपकार के लिए वृक्ष हमें फल देते हैं, किन्तु स्वयं उसका सेवन कभी नहीं करते, ठीक इसी प्रकार पर उपकार में ही नदी भी बहती है पर स्वयं अपना जल कभी भी नहीं पीती। सज्जन व्यक्ति पर उपकार के लिये ही जीवन जीते हैं।

२– "**आत्मार्थं जीवलोकेऽस्मिन् को न जीवति मानवः।**
परं परोपकारार्थं यो जीवति से जीवति।।

प्र0-2-कवेः कस्य सत् जीवनं अकथयत्?
उ0-छात्र मौन रहते हैं।

स्पष्टीकरण कविता :
इस संसार में स्वयं के लिए कौन नहीं जीता अर्थात् हम सभी अपने लिये ही जीते हैं, किन्तु जो दूसरों के लिए अर्थात् परहित के लिए जीते हैं वही सच्चा जीवन है।

समभाव कविता :

"रहिमन पर उपकार के करत न यारी बीच।
मांस दियो शिव भूप ने दीन्हों हाड़ दधीच।।"

कविवर रहीमदास जी द्वारा उपर्युक्त पंक्तियों से तात्पर्य है कि परोपकारी मनुष्य परमार्थ करते समय यारी दोस्ती का विचार नहीं करता, जिस प्रकार राजा शिवि ने पर उपकार में अपने शरीर का मांस देने में लेस मात्र संकोच नहीं किया, महर्षि दधिचि ने अपने शरीर की हड्डियाँ दान कर दीं।

यह समभाव की कविता उपर्युक्त श्लोक को पूर्ण करने के साथ-साथ उसकी व्याख्या करने का कार्य भी कर रही है। राजा शिवि एवं महर्षि दधिचि जैसे महापुरूषों का जीवन ही सच्चा जीवन है।

१५–**सस्वर पाठ**	छात्राध्यापक/छात्राध्यापिका कक्षा में सस्वर पाठ हेतु श्लोक की एक-एक पंक्ति का उचित यति, गति एवं लय के अनुसार पाठ करेगा/करेगी, तत्पश्चात् छात्र उस पंक्ति को दोहरायेंगे।
१६–**सौन्दर्यानुभूति प्रश्न**	प्र०–१ **"परोपकाराय फलन्ति वृक्षा :** **परोपकाराय वहन्ति नभः।** उपर्युक्त पंक्ति में पद्य का सौन्दर्य बढ़ाने वाले कौन-कौन से शब्द हैं? प्र०–२ **"आत्मार्थ जीवलोकेऽस्मिन् को न जीवति मानवः।** **परं परोपकारार्थं यो जीवति स जीवति।।"** इस श्लोक में किस अलंकार का प्रयोग हुआ है?
१७–**गृहकार्य**	छात्राध्यापक/छात्राध्यापिका को आज पढ़ाये गये दोनों श्लोकों को कंठस्थ करके लाने का आदेश देगा/देगी।